विषय दर्शनशास्त्र
स्नातक प्रथम वर्ष
विषय वस्तु- प्रथम आर्य सत्य
बौद्ध दर्शन

MAHRAJA college Aara

डुमरेंद्र राजन

17-06-21

- महात्मा बुद्ध द्वारा प्रतिपादित पहला आर्य सत्य है सर्व दुखम जिसका अर्थ है **सब तरफ दुख है**
- **दुख का अर्थ है कष्ट**
- गौतम **बुद्ध ने वृद्ध ,रोगी एवं मृत व्यक्ति को देखकर अचानक ही सन्यास ग्रहण कर लिया था**
- मानव को होने वाले अनिवार्य दुखों से गौतम बुध का ह्रदय करुणा से भर उठा था इसीलिए उन्होंने गृह त्याग दिया तथा सभी प्रकार के दुखों से मानव को बचाने के लिए उन्होंने बौद्ध दर्शन की नींव रखी

- दुख से बचने के साधन खोजने के पूर्व बुद्ध सर्वप्रथम इस तथ्य की ओर हमारा ध्यान केंद्रित करते हैं कि” **सर्वत्र दुख ही दुख है** “
- वृद्धावस्था रोग एवं मृत्यु के अतिरिक्त बुध कहते हैं और भी बहुत से दुख हैं; **अप्रिय से सहयोग दुख है ,प्रिय से वियोग दुख है** अपने व्यक्तित्व की रक्षा के लिए संघर्ष भाग्य के उतार-चढ़ाव आदि अत्यंत दुखद है

- गौतम बुध का कथन है कि हमारे अनादि काल से चलने वाली महायात्रा में **“मनुष्य ने जितने आंसू बहाए हैं वह चार महासागरों के जल से अधिक हैं”**
- हमें जीवन में केवल दुख ही नहीं सुख भी तो मिलते हैं इस पर भी गौतम बुद्ध कहते हैं **“भ्रम वश हम दुख को ही सुख मान बैठते हैं**
- हर सुख अंततः दुखदाई ही होता है ,वस्तुतः संसार की अनित्य चीजें हमें सुख दे ही नहीं सकती हमारे आसपास जितने भी वस्तुएं हैं अंत तक सभी दुख ही देती है!

- इस प्रकार गौतम बुध प्रथम आर्य सत्य में हमें यह बताने का प्रयास करते हैं की संसार में दुख ही दुख है ।
- लेकिन हमें निराश नहीं होना है, दुख का कारण भी है ;उसके निवारण के लिए मार्ग भी है जिसकी चर्चा वह अगले आर्य सत्य के रूप में करते हैं!